ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

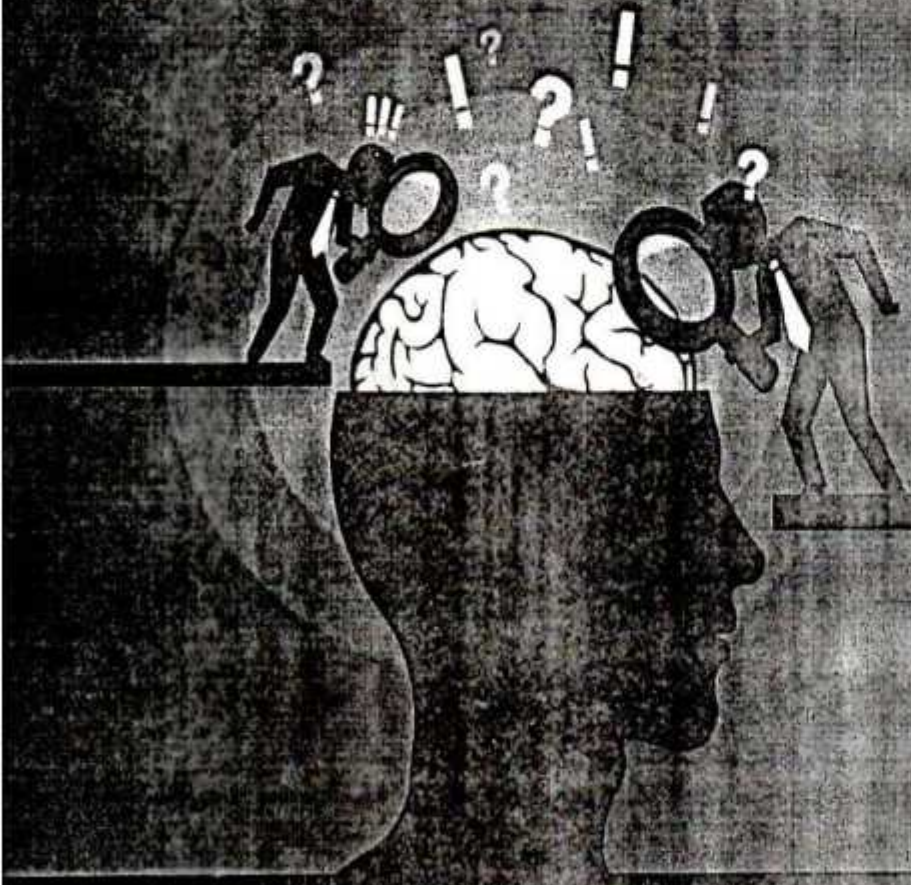

IMPACT FACTOR : 5.051

P-1969.

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक
डॉ. अश्विनी महाजन
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक
प्रो. प्रसून दत्त सिंह
महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी
डॉ. फूल चन्द
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

1732	प्रवासी जीवन की अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में परम्परा और प्रगति का अध्ययन–सोनी यादव	1890
1736	नरेश मेहता द्वारा रचित धूमकेतु और अरण्या का विवेचनात्मक अध्ययन–अशोक कुमार यादव	1893
1741	"वर्तमान सन्दर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता की उपादेयता"–डॉ० वन्दना सिंह	1896
1745	काशीनाथ सिंह की कहानियों में यथार्थवाद का चित्रण–देवव्रत यादव	1899
1750	उच्च शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–डॉ० ममता मणि त्रिपाठी	1902
1753	नैषधीयचरितम् महाकाव्य में नल के व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ० अमृत कौशल	1905
1757	मीनाक्षी स्वामी के उपन्यास 'भूमल' में स्त्री चेतना–विजय कुमार पाल	1909
1761	डॉ० नगेन्द्र द्वारा रस निष्पत्ति के सम्बन्ध में मौलिक विचारों का अध्ययन–विशाल मिश्र	1913
1764	हिंदी साहित्य में स्त्री -विमर्श–डॉ० दिनेश श्रीवास	1916
1766	राजस्थान के बाड़ सम्भाव्य पूर्वी मैदानी कृषि जलवायु प्रदेश में फसल प्रतिरूप परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन–अमिता बाई यादव	1919
1772	जैन-तीर्थ-स्थलों से जुड़े प्रबन्धन में स्वार्थ-परक राजनीति का प्रवेश–पवन कुमार जैन	1926
1777	कुसुम अंसल साहित्य में पारिवारिक रिश्तों का बदलता स्वरूप–डॉ० विक्रम सिंह; डॉ० सुनीता	1928
1781	"मुरैना जनपद के मन्दिरों में प्रतिबिम्बित प्राचीन भारतीय मन्दिर स्थापत्य का विकासक्रम"–प्रो० प्रभात कुमार; गौरव सिंह	1930
1785	कोरोना संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव–डॉ० संतोष कुमार लाल	1934
1789	सूर्यबाला की कहानियों में वृद्ध और आधुनिकता के व्यंग्यात्मक पहलू–नरेंद्र कुमार स्वर्णकार	1937
यक्रम	अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में 'जेण्डर पाठ्यक्रम' की आवश्यकता क्यों–वन्दना शर्मा; प्रो० वन्दना गोस्वामी; डॉ० अजय सुराणा	1940
1792	व्याकरण शास्त्रे प्रमाणम्–डॉ० सुभाषचन्द्र मीणा	1943
1798	एक राष्ट्र एक चुनाव: एक विश्लेषण–गुलशन कुमार; डॉ० मानसी सिन्हा	1947
1801	आधुनिक शिक्षा प्रणाली का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन–डॉ० सुशील कुमार सिंह	1950
1805	तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल–डॉ० राम टहल दास	1954
1810	हठयोग: आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता–ज्योति शर्मा; प्रो० गणेश शंकर गिरि	1959
1814	कृष्णा सोबती का अंतिम उपन्यास 'चन्ना': विश्लेष्णात्मक अध्ययन–पूजा मिश्रा	1962
1819	नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री जीवन की समस्या–सूर्यकांत एम०बी०	1966
1822	हरियाणा की प्रतिनिधि हिंदी कहानियां–डॉ० ओम प्रकाश सैनी	1969
1825	भारतीय संदर्भ में आतंकवाद के कारण: एक अध्ययन–सुरेन्द्र प्रसाद	1973
1827	योगिता यादव की कहानियों 'अनहोनी' तथा 'भेड़िया' मे नारी अस्मिता का मुद्दा–प्रेम सिंह	1977
1833	आनंदमठ उपन्यास की समीक्षा–डॉ० प्रीति राय	1980
1836	मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में यथार्थबोध–डॉ० प्रीति राय; हरकेश कुमार	1983
1839	सामाजिक परिवर्तन के वाहक बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर एक अवलोकन–सुरेन्द्र सिंह	1988
1842	डॉ० भीमराव आम्बेडकर का राष्ट्रवाद–डॉ० चन्द्रशेखर आजाद	1992
1845	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जल संग्रहण की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन–हरिओम; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा	1995
1848	योगिता यादव के कथा साहित्य में मानवीय मूल्यों की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति–सुमन	1997
1852	हरियाणा पर्यटन:- चुनौतियां एवं सुझाव–राजेश कुमार; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा	2000
1854	नागरिकता (संशोधन) अधिनियम 2019–डॉ० अविनाश कुमार लाल; श्रीमती अविंदना जैन	2005
1858	"वैदिक मनोविज्ञान"–अनामिका वर्मा	2010
	गोंड जनजातीय महिलाओं की स्थिति का ऐतिहासिक विश्लेषण (कांकेर जिला के विशेष संदर्भ में)–डॉ० वन्सो नुरूटी	2013
1862	देवेन्द्र कुमार बंगाली की कविताओं में जनपक्षधरता–डॉ० राम पाण्डेय	2019
1869	गदल का प्रासंगिक-विमर्श–डॉ० रमेशकुमार टण्डन	2022
1873	भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर का अवदान–डॉ० विजय कुमार	2025
1878	दलित स्त्री-अस्मिता का कोरस : सुशीला टाकभौरे की कविताएं–कार्तिक राय	2029
रती 1882	कविता के आइने में थर्ड जेंडर–डॉ० शबाना हबीब	2032
1886	उत्तर प्रदेश की राजनीति में महिला सहभागिता–डॉ० प्रमिला यादव	2038

से निकालने को चाहते
परेशान करना मानसिक

न आर्थिक रूप से एक
गैरत की हँसली पसली
ल्जाम लगाकर, घर की

री इसका दुरुपयोग कर
हैं।"[13] मगर नासिरा शर्मा

हरियाणा की प्रतिनिधि हिंदी कहानियां

डॉ० ओम प्रकाश सैनी

(डी. लिट्), एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल, हरियाणा

भूमिका: हिंदी कहानी की विकास यात्रा को समृद्ध करने में हरियाणा प्रदेश के कहानीकारों का विशेष योगदान रहा है। कहा जा सकता है कि शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े इस प्रदेश के कहानीकारों ने समय की नब्ज को बखूबी पकड़ अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। हरियाणा की माटी से उत्पन्न कलाकारों की कहानियों ने हिंदी कहानी में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। हरियाणा प्रदेश के कहानीकारों में सर्वश्री माधव प्रसाद मिश्र, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, विष्णु प्रभाकर, यशपाल वैद, ऊर्मि कृष्ण, राकेश वत्स, स्वदेश दीपक, रोहिणी अग्रवाल, सुधा जैन, शकुंतला बृजमोहन आदि का नाम लिया जा सकता है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इन्हें चार काल खंडों में बांटा जा सकता है।

1. स्वतंत्रता पूर्व की कहानी
2. स्वातंत्र्योत्तर कहानी
3. समकालीन कहानी
4. उत्तर आधुनिक कहानी अथवा इक्कीसवीं सदी की कहानी।

स्वतंत्रता पूर्व हरियाणा के हिंदी कहानीकारों में सर्वश्री माधव प्रसाद मिश्र, विश्वंभरनाथ शर्मा कौशिक, विष्णु प्रभाकर का नाम लिया जा सकता है। आजादी से पहले रची गई इन कहानियों का वर्ण्य-विषय सामाजिक रूढ़ियों एवं आडम्बरों पर प्रहार करना है। समाज सुधार की भावना इन कहानियों का लक्ष्य रहा है। वस्तुतः पराधीनता के इस काल में संपूर्ण भारत जहां आजादी के लिए संघर्षरत था वहीं राष्ट्रीय स्तर पर आर्य समाज तथा ब्रह्म समाज की स्थापना के कारण सामाजिक सांस्कृतिक उत्थान की प्रक्रिया भी जारी थी। हरियाणा के कहानीकारों ने परिवेशजन्य विकट परिस्थितियों और संदर्भों से जुड़कर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड़ी है। भारत ने आजादी का सपना लेते हुए दो विश्व युद्धों की विभीषिका को झेला। 1947 में अनेक समस्याओं का अंबार लेकर भारत आजाद हुआ। देश विभाजन के साथ-साथ संसाधनों का भी बंटवारा हुआ। परिणाम स्वरूप बढ़ती जनसंख्या, महंगाई, दरिद्रता, बेरोजगारी ने देश के युवाओं के सपनों को दीमक की तरह चट कर दिया। हम कहें कि युगीन साहित्यकारों को इन सभी समस्याओं समस्याओं से दो-चार होना पड़ा। आजादी के बाद मोहभंग की स्थिति को जिन साहित्यकारों ने यथार्थ के धरातल पर उतारा है, उन सृजनधर्मी कथाकारों में जयनाथ नलिन, शशिभूषण सिंहल, देवीशंकर द्विवेदी का नाम लिया जा सकता है। इस दौर में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कहानियां भी लिखी गई। अनेक कहानीकारों ने सामाजिक समस्याओं पर लिखकर उनका गांधीवादी आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किया। यह एक ऐसा दौर है जब हिंदी कहानी विशेषकर साठोत्तरी कहानी जैनेंद्र और अज्ञेय के मनोविज्ञान से प्रभावित थी। हरियाणवी कहानीकार ने भी हिंदी कहानी में संरचना के स्तर पर होने वाले बदलावों को निकटता से महसूस किया। जयनाथ नलिन ने शसिक्केः असली नकलीश, शजवानी का नशाश आदि कहानी संग्रहों के माध्यम से सामाजिक ताने-बाने को उकेरने का स्तुत्य प्रयास किया। नलिन की कहानियों में सामाजिक विसंगतियों विद्रूपताओं एवं नर-नारी प्रेम संबंधों का सूक्ष्म अंकन हुआ है। इस दौर के कहानीकारों में मोहन चोपड़ा एक सशक्त कहानीकार है, उनकी सत्तर के लगभग कहानियां चार कहानी संग्रहों में संकलित हैं। चोपड़ा की कहानियों में शबंद दरवाजेश, शपीले पत्तेश, शश्याम और अकेलाश आदि प्रमुख हैं। इनकी अनेक कहानियों का विदेशी भाषाओं यथा चेक, रूसी, जर्मन आदि में अनुवाद भी हुआ है। जीवन की तमाम विसंगतियों पर प्रहार करती इनकी कहानियों में नगरीय जीवन बोध का सफल चित्रण हुआ है। रामसेवक सिंह की कहानियों में जीवन यथार्थ को उद्घाटन हुआ है। उनके प्रसिद्ध शसंज्ञाश संग्रह की अधिकांश कहानियों में मनोवैज्ञानिकता की प्रधानता है। शशिभूषण सिंघल की कहानियों का पाट अत्यंत विस्तृत है। उन्होंने सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विषयों को आधार बनाया है। यश गुलाटी की कहानियों में निजी सुख-दुख की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। कहा जा सकता है कि हरियाणवी कथाकार ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात परिवेशजन्य विसंगतियों को बड़ी संजीदगी से उकेरा है। कथ्य एवं शिल्प के स्तर पर अभिनव प्रयोग करते हुए इस कहानीकार ने कहानी कला को एक नया मोड़ दिया है। सत्तर-अस्सी का दशक हरियाणवी कहानी का उर्ध्व काल है। यह ऐसा काल है जब कहानीकार ने समकालीन समस्याओं को बारीकी से परखा है। निःसंदेह हिंदी कथा संसार में विष्णु इस काल में कहानीकार अपने संकीर्ण दायरे को तोड़कर राष्ट्रीय पटल पर अपनी अलग विशिष्ट पहचान बनाता है। इस समय के कहानीकारों में शकुंतला ब्रजमोहन, यशपाल वैद, राकेश वत्स, स्वदेश दीपक, चंद्रकांता, ज्ञानप्रकाश विवेक, सुभाष रस्तोगी, माधव कौशिक, रोहिणी अग्रवाल, सुधा जैन सरीखे कहानीकार किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। राकेश वत्स ऐसे कहानीकार हैं जिन्होंने नई कहानी आंदोलन के दौरान उपजे अनेक आंदोलनों में से एक शसक्रिय आंदोलनश की पैरवी कर उसे कहानी साहित्य में विशेष पहचान दिलवाई। यह हरियाणा जैसे छोटे से प्रदेश का कहानी के प्रदेय को प्रमाणित करता है। राष्ट्रीय स्तर पर बड़े-बड़े कहानीकारों के साथ कदमताल करना सिद्ध करता है कि आज हरियाणा की हिंदी कहानी परिमाण और परिणाम दोनों ही दृष्टियों से राष्ट्रीय कहानी के समक्ष सीना ताने खड़ी है,यह सब उन सभी कहानीकारों की बदौलत संभव हुआ है जिन्होंने समय की नजाकत को समझ विषयानुकूल कहानियां गढ़ी। सच मे कहा जावे तो ये कहानियां आज के समय का स्पंदन है।

विषय प्रवेश : हिंदी कथा संसार में विष्णु प्रभाकर किसी परिचय के मोहताज नहीं है। 'धरती अब भी घूम रही है' प्रभाकर जी की ही नहीं हिंदी कथा

निष्कर्ष: सार संक्षेप में कहा जा सकता है कि हरियाणा की कहानी भौगोलिक दृष्टि से भले ही एक प्रदेश विशेष के कहानीकारों के प्रयास को दर्शाती हो, परंतु उसमें राष्ट्रीय स्तर की कहानियों से होड़ लेने की बराबर क्षमता है। राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कहानी की कोई भी प्रवृत्ति ऐसी नहीं जो उनकी दृष्टि से ओझल हुई हो। मुझे यह कहते हुए तनिक भी संकोच नहीं है कि जिन राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय समस्याओं से हिंदी कहानीकार काफी अरसे बाद परिचित हुआ,या अब हो रहा है, हरियाणा का कहानीकार बहुत पहले उन विश्वव्यापी समस्याओं से रू-ब-रू हो चुका था, प्रमाण उसकी कहानियां हैं। हरियाणा के हिंदी कहानीकारों की कहानियों में लिव -इन -रिलेशन, अंतरजातीय विवाह, दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, बाल विमर्श, वृद्ध विमर्श के अतिरिक्त अनेक समसामयिक समस्याओं का उद्घाटन हुआ है। यह प्रमाणित करता है की यह कहानीकार अपने समकालीनों से किसी भी दृष्टि में पीछे नहीं है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. लालचंद गुप्त श्मंगलश्र हरियाणा प्रतिनिधि कहानियां, हरियाणा साहित्य अकादमी पंचकूला, 2003, पृष्ठ संख्या. 45
2. वही, पृष्ठ संख्या. 51
3. वही, पृष्ठ संख्या. 79
4. वही, पृष्ठ संख्या. 80
5. वही, पृष्ठ संख्या. 58
6. वही, पृष्ठ संख्या. 60
7. वही, पृष्ठ संख्या.7